Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 12, (2017) 95-99

कुमाऊनी (उत्तराखण्ड) राजी जनजाति की सभ्यता एंव संस्कृति

हरेश राम[1*] एवं नीलम आर्या[2]
[1]संकुल संदर्भ व्यक्ति – बिल्लेख ताड़ीखेत (अल्मोड़ा)
[2]कुमाऊ विश्वविद्यालय नैनीताल

*Corresponding Author Email: haresh.ram159@gmail.com

Received: 17.07.2017; Revised: 15.09.2017; Accepted: 20.11.2017
©Society for Himalayan Action Research and Development

सारांश–: पाषाणिक संस्कृति को पीढ़ी हस्तान्तरित करने वाली अनेक जनजातियां अपने विशेष भौगोलिक आवास, वेश–भूषा, रहन–सहन, धार्मिक विश्वासों, रीति–रिवाजों तथा शर्मीले स्वभाव आदि के कारण अपनी एक अलग सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान बनायें हैं। जनजातियां मुख्यतः सघन वनाच्छादित क्षेत्रों में निवास करने के कारण वाह्य क्रियाकलापों व लोगों से लम्बें समय तक अछूते रहे हैं।लेकिन जनसंख्या वृद्धि, कृषि योग्य भूमि की कमी तथा वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास में इन्हें दुनिया के समक्ष आने को मजबूर कर दिया है। उपरोक्त परिस्थितियों का सामना उत्तराखण्ड के कुमांऊ मण्डल में पायी जाने वाली राजी जनजाति को अदेय व्यापारी से बाजार तक तथा झूम खेती से दैनिक मजदूरी तक का सफर करने को मजबूर किया है। जिसके परिणाम स्वरूप सांस्कृतिक विलम्बन जैसी क्रियाकलापों के साथ– साथ सभ्यता, रहन–सहन, रीति–रिवाज, आर्थिक व धार्मिक आदि क्रियाकलापों में भी परिवर्तन है। आज के विषम परिस्थिति में पाषाणिक संस्कृति को संजोये रखना एक चुनौती बन गया है।

कुंजी शब्द: राजी जनजाति का उद्भव, आवास, शारीरिक बनावट, भाषा, रहन–सहन, खान–पान व पहनावा, सामाजिक स्तरीकरण, संस्कार –विवाह व अन्तिम संस्कार, आर्थिक व राजनैतिक गतिविधियां

प्रस्तावना

कुमांऊनी (उत्तराखण्ड) राजी जनजाति की सभ्यता एव सांस्कृति – उत्तराखण्ड में मुख्य रूप से जौनसारी, थारू, भोटिया, बोक्सा व राजी जनजातियां निवास करती हैं, जिन्हें 1967 में अनुसूचित जनजातियां घोषित किया गया था। उपरोक्त पाँच जनजातियों में से सर्वाधिक जनसंख्या वाली दो जनजातियां क्रमषः जौनसारी व थारू हैं जबकि सबसे कम जनसंख्या वाली जनजाति राजी है।[1] प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराखण्ड की सबसे कम जनसंख्या वाली राजी जनजाति की सभ्यता एवं संस्कृति का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

कुमांऊ की प्रथम जनजाति शौका या भोटिया तथा दूसरी जनजाति राजी है।[2] इनको बनरौत, बनराऊत, वनरावत, वनमानुष, जंगल के राजा आदि नामों से भी संबोधित किया जाता है लेकिन राजी नाम सर्वाधिक प्रचलित है।[3] सघन वनाच्छादित क्षेत्रों में आवासित तथा उन्हीं से उत्पादित वस्तुओं पर जीवन निर्वाहन करने वाली इस जनजाति को वनरावत या वनकन्हैया के नाम से भी जाना जाता है।[4] लोक कथाओं के अनुसार पिथौरागढ़ के उत्तरीभाग में ऐस्टक वंषज का शासन था। आपसी मतभेद के कारण इनके एक भाई को वनराज्य प्रदान किया गया, जिसके वंषज वर्तमान में राजी या वनरावत कहे जाते हैं।[5] राजी कहते हैं कि जब दुनिया बनाई गई थी, उस समय दो भाई राजपूत थे। बड़े भाई को षिकार खेलने का शौक था। वह ज्यादातर जंगलों में रहने लगा। इसी कारण राज्य छोटे भाई को मिला। जब छोटा भाई अच्छी तरह राज्य में स्थिर हो गया, उसने बड़े भाई से कहा कि –''उसको षिकार का शौक बहुत है'' इसलिए वे सदैव जंगल में रहें, शहर में न आयें, अपने को जंगल का मालिक समझे । तबसे बड़ा भाई जंगल में रहने लगा, और अपने को राजी कहने लगा। उसकी संतान भी जंगल में ही रहने लगी।[6]

कुमांऊ के पिथौरागढ़ व चम्पावत जनपद के कुल नौ गांवों में निवास करते है। जिसमें पिथौरागढ़ जनपद के धारचूला तहसील के चार गांव भकोतिया, चिफलतारा, गया व किमखोला तथा डीडीहाट तहसील के चार गांव अल्तड़ी, चौरानी,

कन्तोली व मदनबोरी तथा चम्पावत जनपद के चम्पावत तहसील के एक गांव खिरद्वाठी में निवास करते हैं।[7] 1981 की जनगणना के अनुसार इनकी जनसंख्या 1078 थी जो 1991 से घटकर 494[8] तथा 2001 की जनगणना आंषिक रूप से बढ़ोतरी होकर 528 हो गयी।[9]

इस समय जो राजी लोग अस्कोट में रहते हैं, वे अपने को कुमाऊँ का मूल–निवासी बताते हैं।[10] पुराणों में एक कथा राजा बेन की है। वह चन्द्रवंषी राजा था। वह शास्त्र व वेदों का विरोधी था। इसलिए प्रजा ने उसे मार डाला। उसके वहां कोई राजा बनने लायक नहीं था। तब समस्त कर्मचारियों ने एकत्र होकर उसकी मृत–देह को मथा। उसके बांये हाथ से एक काले रंग का छोटी आंख वाला एक नाटा पुरूष निकला। उसका नाम कुरूण था। उसको देखकर ब्राहमणों ने कहा यह मनुष्य राजा बेन के पाप से बना है। यह राजा के लिए अयोग्य है। जब वह आज्ञा के लिए खड़ा हुआ तो ब्राहमणों ने कहा– निषाद। तब यह बैठ गया, इसलिए वह निषाद कहलाया। दाहिने हाथ के मथने से सुन्दर मनुष्य पैदा हुआ। जिसका नाम पृथु हुआ। इससे जगत का नाम पृथ्वी पड़ा। पृथु, पृथ्वी का राजा और निषाद जंगलो का राजा। सम्भव है राजी भी इन्हीं निषादों में से हैं। क्योंकि इनकी कहानी भी पौराणिक कहानी से मिलती है।[11] राजी स्वयं को रजबार राजपूत मानते हैं।[12] प्राचीन काल में गंगा पठार के पूर्व से लेकर मध्य नेपाल तक के क्षेत्र में अग्नेयवंषीय कोल–किरात जातियों का निवास था। कालान्तर में इन्हीं के वंषज राजी के नाम से जाने गए।[13] राजी जनजाति किरात वंषीय है जो अतीत में हिमालय में आकर बस गये तथा पर्यावरण के अनुकूल अपने को समायोजित कर लिया।[14] उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि राजी लोग किरात वंषियों के अधिक नजदीकी थे। राजी कद में छोटे होते हैं। चपटे मुँह व नाक ऑखे सूजी हुई होती है।[15] इनकी काठी मजबूत तथा होठ कुछ बाहर की ओर मुड़े हुए होते है। बाल घुमावदार होते हैं षरीर का वर्ण समान्यतः काला होता है।[16] इनकी आंखे काली, लघु कपाल धारिता तथा कुछ लोग गौर वर्ण व सीधी नाक आदि शारीरिक लक्षणों से युक्त भी होते हैं।[17] उपरोक्त शारीरिक लक्षणों के आधार पर ये लोग मंगोल तथा हिन्दू निम्न जाति का सम्मिश्रण प्रतीत होते हैं।

राजी जनजाति की मात्र भाषा 'मुंण्डा' है परन्तु बाहर कुमांऊनी भाषा भी बोलते हैं।[18] कुछ लोग मानते हैं कि राजी वर्मा–तिब्बती भाषा का प्रयोग करते हैं परन्तु वर्तमान में कुमाऊँनी एवं हिन्दी भाषा का भी प्रयोग करने लगे हैं। शब्दों के उच्चारण में मूल भाषा का प्रभाव परिलक्षित होता है।[19] यदि बारीकी से राजी लोगों का विष्लेषण किया जाय तो इसमें तिब्बती व संस्कृत शब्दों की अधिकता पायी जाती है। किन्तु मुख्यता मुंडा भाषा की होती है। मुंडा भाषा का प्रयोग स्थानीय रूप में ही करते हैं। बाह्य संपर्क हेतु ये कुमांऊनी का प्रयोग करते हैं। कुल मिलाकर इनकी भाषा हिन्दी और पहाड़ी का सम्मिश्रण है।[20] राजी भाषा तिब्बती, संस्कृत, हिन्दी तथा कुमांऊनी आदि भाषाओं का सम्मिश्रण है।

राजियों का निवास स्थान "रौत्यूड़ा" कहलाता है।[21] ये अधिकांषतः वनों में निवास करते हैं पर कहीं–कहीं गुफाओं और झोपड़ियों में भी निवास करते हैं।[22] ये लोग पत्थर की दीवार तैयार कर लकड़ी और पत्तों की सहायता से छप्पर डालकर छोटे–छोटे घरों का निर्माण पर्वतीय ढालों पर करते हैं, जिनका आकार खोहनुमा होता है। इनके आवास घने जंगलों में होते हैं। घरों के निर्माण एवं इनकी प्रकृति से स्पष्ट होता है कि ये एकांतवासी होते हैं। ठंड से रक्षा के लिये ये विशेष प्रकार के मकान तैयार करते हैं या तो गुफाओं में रहते हैं।[23] बाह्य लोंगों के संपर्क तथा राजकीय सहायता से इनके रहन–सहन में भी परिवर्तन होने लगा है।

राजी जनजाति वन वस्तु संग्राहक हैं। ये लोग वन उत्पादित फल एवं कन्दमूल को भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं। इसके अलावा जंगली मुर्गियों एवं छोटे पशुओं का भी शिकार करते हैं।[24] प्राचीनकाल में ये जंगली मुर्गियां, सुअर, भैंस व लंगूर (गुडी) का भी शिकार खाते थे।[25] मत्स्य का शिकार यंदा–कदा करते हैं। वर्तमान समय में इनकी भोज्य संस्कृति में निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। ज्यों–ज्यों बाहय संपर्क बढ़ रहा है त्यों–त्यों फल एवं कन्दमूलों के स्थान पर रोटी, दाल, सब्जी का प्रयोग भी प्रचलित हो रहा है।[26] राजी लोग निम्नजाति के लोगों के द्वारा पकाया हुआ भोजन नहीं खाते हैं। इनके परिवार के सभी सदस्य चौके में एक साथ भोजन करते हैं तथा साथ–साथ शराब पीते हैं।[27] जनसंख्या वृद्धि व कृषि योग्य भूमि की कमी ने राजी जनजाति के जीवन में भी हस्तक्षेप किया है। जिसका परिणाम राजियों के लिये सुखद भी रहा है और कई मायनों में दुःखद भी रहा है।

राजी लोग वस्त्रों का प्रयोग नही ंके बराबर करते हैं। अधिकांषतः पेड़–पौधों की छालों एवं पत्तों से अपना काम चलाते हैं।[28] राजी पुरूष कपड़ों के नाम पर केवल लंगोट पहनते हैं तथा स्त्रियां धोती या चादर से गाती बाँधते हैं। वर्तमान समय में यह बाह्य लोगों के संपर्क में आने से अपना पहनावा भी अन्य कुमांऊनी लोंगों की तरह ही करने लगें हैं।

राजी या वनरौतों में सामाजिक स्तरीकरण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। यें पाँच धड़ों में बंटे हुए हैं– 1. अस्कोटी पाल, 2. डिन्सी पाल, 3. बैतड़ा, 4. ऐरी तथा 5. क्वेन्तला। प्रत्येक धड़ा अपने आप वहिर्विवाही समूह है लेकिन अंतर धड़ा विवाह सामाजिक रूप से मान्यता प्राप्त है। प्रत्येक धड़े का अपना ईष्ट देवता होता है। जिसकी ये समय–समय पर पूजा करते हैं।[29] राजी समाज की धार्मिक संरचना हिन्दू धर्म से समानता रखती है। ये देवी देवताओं की पूजा करते हैं। इनके प्रमुख देवताओं में – मलैनाथ, घननाथ, महादेवी, देवी, मल्लिकार्जुन आदि प्रमुख हैं।

इनके अलावा काली एवं दुर्गा की पूजा का भी प्रचलन में है। इनके देव स्थान खुले आकाष के नीचे होते हैं। ये किसी वृक्ष के मूल में एक चबूतरे का निर्माण करते हैं तथा उस पर पत्थर रखकर भिन्न–भिन्न देवी देवताओं का नामकरण करते हैं। ये नंदा देवी की आराधना करते हैं इनकी पूजा में पषु बलि चढाते हैं। किसी भी मांगलिक कार्य के समय कुल देवता की आराधना की जाती है।[30] ये जंगल के देवता की पूजा भी करते हैं तथा उसे प्रसन्न करने के लिये उन स्थानों पर पषुओं की हड्डियां गाढ़ते और टांगते हैं। इन लोगों का विष्वास है कि देवी देवता पहाड़ो की चोटी, नदी, तालाब और कुंओं में रहते हैं। जंगल से घर आते समय यदि कोई राजी बीमार हो जाता है तो उन्हें जंगल के देवता के नाराज होने का विष्वास होता है। इनका प्रमुख देवता "बाघनाथ" है।[31]

राजी का अपना एक छोटा समाज है। ये लोग पितृवंषीय, पितृस्थानीय एवं पितृसत्तात्मक परिवार वाले हैं। इनका मुखिया घर का सबसे बुजुर्ग व्यक्ति होता है। परिवार के सभी सदस्य मिलकर वन वस्तु संग्रह करते हैं। राजी एक विवाही होते हैं। ये अपने गोत्र से बाहर विवाह करते हैं। ये तीन पुष्तों तक आपस में विवाह नहीं करते हैं। यहां पर वधु के मूल्य का प्रचलन नाममात्र का है। यह मूल्य लगभग 200 से 250 रू0 तक होता है। विवाह प्रकिया अत्यंत सरल है। कपड़े के टुकड़े पर वनकन्या को बैठाकर दोनों को तिलक लगाया जाता है, तत्पष्चात ये दोनों एक–दूसरे को गुड़ या मिश्री खिलाते हैं। समाज इनको पति–पत्नी के रूप में मान लेता है। इनमें बहु पत्नी प्रथा का प्रचलन है। पुनःविवाह, अपहरण विवाह, विधवा विवाह का प्रचलन राजी में नहीं है। तलाक अत्यंत कठिन है।[32]

राजी अपने आपको राजपूत मानते हैं तथा निम्न जातियों को अछूत मानते हैं। जब कुछ अछूत राजियों के घर भीतर आ घुसे तो 22 जगह से पानी लाकर घर को लीपते हैं। वासन व बर्तनों को धोकर सुखाते हैं। नगर व गांव के आदमियों से अपनी स्त्रियों का पर्दा करते हैं। राजी सिर में चुटिया रखने को ही व्रतबंध करना कहते हैं। जब कोई मर गया तो उसको जला देते हैं। 10 दिन तक रोज सायंकाल समय थोड़ा भात व पानी मुर्दे के नाम पर घर से बाहर रख आते हैं, इसी को सद्गति समझते हैं।[33]राजी जनजाति के लोग स्त्रियों में होने वाले जैविक परिवर्तन जैसे मासिक धर्म, प्रसुति काल आदि में उन्हें अन्य गैर जनजाति समाज की तरह कमषः पाँच दिन और नौ दिन तक अपवित्र माना जाता है। गौमूत्र छिड़काव से शुद्धिकरण किया जाता है।[34] राजी जनजाति लोगों के मुख्यतः दो त्यौहार हैं– कर्क संक्राति तथा मकर संक्राति। इन त्यौहारों पर सभी परिवारों में पकवान आदि बनाये जाते हैं। लोगों को त्यौहारों का काफी समय से इंतजार रहता है। इन त्यौहारों को ये हर्षो उल्लास के साथ मनाते हैं। इसके अलावा राजी जनजाति में कंडाली नामक उत्सव प्रत्येक 12 वर्ष में मनाया जाता है।[35] कहा जा सकता है कि कंडाली राजी जनजाजि का महाकुंभ है।

राजियों की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार लकड़ियों के बर्तन एवं दैनिक उपयोग की वस्तु बनाकर उन्हें बेचना है। जिनमें गैठी व सानड़ की लकड़ी के ठेकी पल्टना, चौड़ा, (घी रखने का) बिनड़ा (दही मथने का), नाली (नापने का) हल जुआ, कुदाल, हाषिया, फावड़े आदि के हत्थे, मूषल आदि बनाना प्रमुख है।[36] कुछ समय पूर्व तक ये लोग अदृष्य व्यापारी के रूप में जाने जाते थे क्योंकि विभिन्न प्रकार के बर्तन बनाते थे और उन्हें जिन चीजों की आवष्यकता होती थी उसका एक छोटा सा टुकड़ा चिपकाकर ये लोग रात के समय आस पास के गांवो में जाकर अपने बनाये बर्तनों को लोंगों के घर के बाहर छोड़ कर चले आते थे। सुबह होने पर उन बर्तनों को लोग संभाल लेते थे व उसके बदले में चाही गयी वस्तु उसी जगह रख देते थे। जिन्हें अगली रात्रि को ये लोग उठा लाते थे।[37] इसलिए ये लोग अदृष्य व्यापारी के रूप में जाने जाते थे। लेकिन आज ये लोग अपनी बनायी सामग्री को स्थानीय बाजारों में ले जाते हैं और उचित मोल भाव के द्वारा उपयुक्त मेहनताना प्राप्त करते हैं।

राजी जनजाति में अब राजनैतिक चेतना भी जागृत होने लगी है। उत्तराखण्ड के प्रथम विधानसभा चुनाव में धारचूला विधानसभा से निर्दलीय प्रत्याषी 'गगन सिंह रजवार'का चुनकर आना इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण है।

राजी स्वभाव से अति रूढ़िवादी, अंधविष्वासी, शीरू एवं संकोची होते हैं तथा प्रत्येक रोग व बीमारी का कारण व उपचार अपने परंपरागत तरीके से अंधविष्वासों के अंतर्गत ढूंढते हैं। राजी समुदाय के 50 प्रतिषत लोग अभी भी वन्य जीवन जैसा ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं फिर भी कुमांऊनी संस्कृति व समाज में उन्हें काफी कुछ प्रभावित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रिपाठी केषरीनन्दन, कुमार अषोक – उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन 2011–12 अध्याय 12 बौद्धिक प्रकाषन अल्लापुर इलाहाबाद पृ0 सं 208
2. बिष्ट शेर सिंह 2010) – कुमांऊँ हिमालय : समाज एवं संस्कृति अंकित प्रकाषन हल्द्वानी पृ0 सं0 40
3. त्रिपाठी केषरीनन्दन, कुमार डॉ अषोक – उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन 2011–12 अध्याय 12 बौद्धिक प्रकाषन अल्लापुर इलाहाबाद पृ0 सं 218
4. मैठानी डी0 डी0, प्रसाद गायत्री, नौटियाल डॉ0 राजेष 2010– उत्तराखण्ड को भूगोल शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ0 सं0 128
5. पाण्डे बद्रीदत्त – कुमांऊ का इतिहास – श्याम प्रकाषन अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा पृ0 सं0 518
6. बिष्ट प्रो0 शेर सिंह – कुमांऊँ हिमालय : समाज एवं संस्कृति (2010) अंकित प्रकाषन हल्द्वानी पृ0 सं0 40 व41
7. मैठानी प्रो0 डी0 डी0, प्रसाद डॉ गायत्री, नौटियाल डॉ0 राजेष – उत्तराखण्ड को भूगोल 2010 शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ0 सं0 131
8. त्रिपाठी केषरीनन्दन, कुमार डॉ अषोक – उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन 2011–12 अध्याय 12 बौद्धिक प्रकाषन अल्लापुर इलाहाबाद पृ0 सं 218
9. पाण्डे बद्रीदत्त – कुमांऊ का इतिहास – श्याम प्रकाषन अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा पृ0 सं0 518
10. पाण्डे बद्रीदत्त – कुमांऊ का इतिहास – श्याम प्रकाषन अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा पृ0 सं0 519
11. बिष्ट प्रो0 शेर सिंह – कुमांऊँ हिमालय : समाज एवं संस्कृति (2010) अंकित प्रकाषन हल्द्वानी पृ0 सं0 41
12. त्रिपाठी केषरीनन्दन, कुमार डॉ अषोक – उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन 2011–12 अध्याय 12 बौद्धिक प्रकाषन अल्लापुर इलाहाबाद पृ0 सं 218
13. मैठानी प्रो0 डी0 डी0, प्रसाद डॉ गायत्री, नौटियाल डॉ0 राजेष – उत्तराखण्ड को भूगोल 2010 शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ0 सं0 129
14. पाण्डे बद्रीदत्त – कुमांऊ का इतिहास – श्याम प्रकाषन अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा पृ0 सं0 516
15. मैठानी प्रो0 डी0 डी0, प्रसाद डॉ गायत्री, नौटियाल डॉ0 राजेष – उत्तराखण्ड को भूगोल 2010 शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ0 सं0 129
16. मैठानी प्रो0 डी0 डी0, प्रसाद डॉ गायत्री, नौटियाल डॉ0 राजेष – उत्तराखण्ड को भूगोल 2010 शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ0 सं0 129
17. नवानी लोकेष – उत्तराखण्ड इयर बुक 2004, बिन्सर पब्लिषिंग कम्पनी देहरादून पृ0 सं0 244
18. मैठानी प्रो0 डी0 डी0, प्रसाद डॉ गायत्री, नौटियाल डॉ0 राजेष – उत्तराखण्ड को भूगोल 2010 शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ0 सं0 129
19. त्रिपाठी केषरीनन्दन, कुमार डॉ अषोक – उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन 2011–12 अध्याय 12 बौद्धिक प्रकाषन अल्लापुर इलाहाबाद पृ0 सं 218
20. बिष्ट प्रो0 शेर सिंह – कुमांऊँ हिमालय : समाज एवं संस्कृति (2010) अंकित प्रकाषन हल्द्वानी पृ0 सं0 41
21. त्रिपाठी केषरीनन्दन, कुमार डॉ अषोक – उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन 2011–12 अध्याय 12 बौद्धिक प्रकाषन अल्लापुर इलाहाबाद पृ0 सं 218
22. मैठानी प्रो0 डी0 डी0, प्रसाद डॉ गायत्री, नौटियाल डॉ0 राजेष – उत्तराखण्ड को भूगोल 2010 शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ0 सं0 129
23. पाण्डे बद्रीदत्त – कुमांऊ का इतिहास – श्याम प्रकाषन अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा पृ0 सं0 518
24. मैठानी प्रो0 डी0 डी0, प्रसाद डॉ गायत्री, नौटियाल डॉ0 राजेष – उत्तराखण्ड को भूगोल 2010 शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ0 सं0 129

25. त्रिपाठी केषरीनन्दन, कुमार डॉ अषोक – उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन 2011–12 अध्याय 12 बौद्धिक प्रकाषन अल्लापुर इलाहाबाद पृ0 सं 218
26. बिष्ट प्रो0 शेर सिंह – कुमांऊँ हिमालय : समाज एवं संस्कृति (2010) अंकित प्रकाषन हल्द्वानी पृ0 सं0 41
27. मैठानी प्रो0 डी0 डी0, प्रसाद डॉ गायत्री, नौटियाल डॉ0 राजेष – उत्तराखण्ड को भूगोल 2010 शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ0 सं0 129 व 130
28. त्रिपाठी केषरीनन्दन, कुमार डॉ अषोक – उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन 2011–12 अध्याय 12 बौद्धिक प्रकाषन अल्लापुर इलाहाबाद पृ0 सं 218
29. मैठानी प्रो0 डी0 डी0, प्रसाद डॉ गायत्री, नौटियाल डॉ0 राजेष – उत्तराखण्ड को भूगोल 2010 शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ0 सं0 129
30. पाण्डे बद्रीदत्त – कुमांऊ का इतिहास – श्याम प्रकाषन अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा पृ0 सं0 519
31. बिष्ट प्रो0 शेर सिंह – कुमांऊँ हिमालय : समाज एवं संस्कृति (2010) अंकित प्रकाषन हल्द्वानी पृ0 सं0 42
32. त्रिपाठी केषरीनन्दन, कुमार डॉ अषोक – उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन 2011–12 अध्याय 12 बौद्धिक प्रकाषन अल्लापुर इलाहाबाद पृ0 सं 219
33. बिष्ट प्रो0 शेर सिंह – कुमांऊँ हिमालय : समाज एवं संस्कृति (2010) अंकित प्रकाषन हल्द्वानी पृ0 सं0 42
34. नवानी लोकेष – उत्तराखण्ड इयर बुक 2004, बिन्सर पब्लिषिंग कम्पनी देहरादून पृ0 सं0 245

****